देश के लिए.....अव्यवस्था के खिलाफ.....

जवाब दो!!!सरकार...

www.jawabdosarkar.com

रेफरेंस संख्या –2020/vps/01 E-Newsletter, Issued in Public Interest शनिवार, 11 जनवरी 2020

जिस राज्य के मुख्यमंत्री को शहर में कचरा उठाने और आवारा पशुओं से निजाद दिलाने की शिकायत करनी पड़ती हो उस राज्य के मुख्यमंत्री को इस्तीफा दे देना चाहिए|

माफ़ कीजिये मुख्यमंत्री महोदय,हमारी नज़रों में आप तो वाकई संवेदनशील मुख्यमंत्री है परन्तु आपके कारिंदे निहायत ही नाकारा और नालायक है|जिनकी वजह से आम जन को तो परेशानी उठानी पड़ती ही है,विश्व हेरिटेज में शामिल जयपुर शहर को भी स्वच्छ रखना चुनौती साबित हो रहा है|

दिनांक 10/12/19 को निगम के सभी आला अधिकारीयों को वाट्सअप,स्वच्छता एप, संपर्क पोर्टल पर और पत्र लिखकर इस मामले की जानकारी दी गयी थी|

राजापार्क के LBS तिराहे पर कचरे के ढेर और आवारा पशुओं की एक महीने पहले नगर निगम जयपुर को की थी शिकायत, एक महीने बाद भी वही हालात

हमारे द्वारा राजापार्क के LBS तिराहे पर कचरे के ढेर और आवारा पशुओं की एक महीने पहले शिकायत की थी परन्तु इस मामले की हर स्तर पर शिकायत करने के बावजूद एक महीने बाद भी कचरे के ढेर और आवारा पशुओं के वही हालात है|इस सम्बन्ध में विभिन्न माध्यमों से की गयी शिकायतों पर जिम्मेदार अधिकारीयों का यदि रटा-रटाया जवाब आता है कि समस्या का समाधान करवा दिया गया है|सम्बंधित जगह से कचरा हटवा दिया गया है और आवारा पशु पकड़ लिए गए है|

परन्तु दिनांक 11/01/20 शाम 5.00 बजे के हालात नगर निगम की पोल खोल रहे है|

जयपुर का नगर निगम है या नाकारा और नालायक अधिकारीयों के वनवास का अड्डा?

मैंने कई समाचार पत्रों में नगर निगम को नरक निगम लिखते पढ़ा था|परन्तु जब नगर निगम की व्यवस्थाओं से पाला पड़ा तो मुझे भी मानना पडा कि लोग गलत नहीं कहते वाकई यह नरक निगम ही है|सरकार भी अपनी सहूलियत देखते हुए यहाँ पर केवल नालायक और नाकारा अधिकारीयों को ही काम पर लगाती है क्यूंकि कई बार मज़बूरी में सरकार को इन अधिकारीयों को घर जंवाई जो बनाना पड़ता है|ऐसे अधिकारी काम करने में नहीं काम करते दिखाने में महारत हासिल किये होते है|ऐसे अधिकारीयों को आम जन की बोलचाल में नस्सरडा बोला जाता है जिसका मतलब होता है किसी भी बात को सुनकर भी अनसुना कहने वाला|

शिकायतों के निपटारे का पुराना ढर्रा ,अफसर एसी कमरों से बाहर नहीं निकलते

नगर निगम जयपुर में शिकायतों के दर्ज होने पर आला अधिकारी अपने माताहत अधिकारी को हडकाते है|माताहत अधिकारी सम्बंधित बाबू को हडकाता है,बाबूजी तम्बाकू खाकर सम्बंधित ठेकेदार को हडकाते है|जिस पर सम्बंधित ठेकेदार का आदमी हाजिर होता है और बाबूजी को चाय पिला कर ऑफिस में बैठे-बैठे ही सम्बंधित समस्या का निवारण कर देता है|बाबूजी खुश होकर ठेकेदार की रिपोर्ट को ही आला अधिकारी को कॉपी पेस्ट कर देते है और इस तरीके से आम जन की शिकायत लाल कपडे में बाँध कर आले में रख दी जाती है|निगम की सबसे बड़ी समस्या यह है कि निगम के आला अधिकारी अपने एसी कमरों से बाहर नहीं ही नहीं निकलना चाहते|जब तक पार्षद और मेयर सक्रीय थे,उनके दबाव में इन अधिकारीयों को अलसुबह ही सफाई का जायजा लेने निकलना पड़ता था|परन्तु मेयर के हटने से यह व्यवस्था भूली बिसरी यादें हो गयी है|

स्थानीय ठेलों द्वारा फैलाया जाता है सफ़ेद थर्मोकोल की प्लेटों का कचरा

राजा पार्क इलाके में ही स्थायी और अस्थायी रेस्टोरेंट्स/होटल्स की संख्या 500 के पार है इसमें वह लोग भी शामिल है जो स्ट्रीट वेंडर्स की श्रेणी में आते है|पूर्व में सख्ती के चलते इन स्ट्रीट वेंडर्स द्वारा कचरे का संग्रहण कर नियत स्थान पर ही डाला जाता था,परन्तु निगम में व्यवस्था बदलने से यह स्ट्रीट वेंडर्स भी आवारा सांड हो गए है और मनमर्जी से कचरा फैंकते है|

दिन के ठेले अलग रात के ठेले अलग

राजा पार्क इलाके में सुबह शाम खाने वालों का तांता लगा रहता है यही कारण है कि यहाँ पर सुबह शाम में,स्ट्रीट वेंडर्स की शक्ले और वैराईटीयां बदल जाती है|पंरतु जो चीज नहीं बदलती, वह है सफ़ेद थर्मोकोल का कचरा,जो कि अमूमन सभी स्ट्रीट वेंडर्स द्वारा उपयोग में लिया जाता है|यही कारण है कि LBS तिराहे पर आज के कचरे की हालत देख लीजिये चाहे एक महीने पहले की,आपको बहुतायत में सफ़ेद थर्मोकोल का कचरा ही मिलेगा जो कि स्ट्रीट वेंडर्स द्वारा ही बहुतायत में उपयोग में लाया जाता है|

नगर निगम उठाता है दो दिन में एक बार कचरा जबकि उठाना चाहिए एक दिन में दो बार कचरा

सबसे बड़ा खुलासा यह है कि नगर निगम के कर्मचारी दो दिन में एक बार कचरा उठाते है जबकि कचरा दिन में चार बार आता है|इस बात का खुलासा करते हुए स्थानीय नागरिकों द्वारा बताया गया कि पहले घर घर कचरा उठाने वाली गाड़ी भी आती थी परन्तु अब सब बंद हो गया है|हमें भी मजबूरन LBS तिराहे पर ही कचरा डालकर आना पड़ता है|